Self Respect

15-07-2014

- ✓ रावण राज्य में सब हैं क्रिमिनल- आइज्ड, एक भी सिविल- आइज्ड नहीं है । अभी तुम हो पुरुषोत्तम संगमयुग पर । अभी बाबा तुमको क्रिमिनल- आइज्ड से बदल कर सिविल- आइज्ड बना रहे हैं । क्रिमिनल- आइज्ड में भी अनेक प्रकार होते हैं- कोई सेमी, कोई कैसे । जब सिविल- आइज्ड बन जायेंगे तब कर्मातीत अवस्था होगी फिर ब्रदर्ली- आइज़ (भाई- भाई की दृष्टि) बन जायेगी ।
- ✓ यह शरीर छोड़ना भी है बाप की याद में । मैं आत्मा बाबा के पास जा रहा हूँ । देह का अभिमान छोड़, पवित्र बनाने वाले बाप की याद में ही शरीर छोड़ना है । क्रिमिनल- आइज्ड होंगे तो अन्दर में जरूर खाता रहेगा । मंजिल बहुत भारी है

- ✓ देवी-देवताओं की महिमा गाई जाती है-सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण .....तुम बच्चों की अवस्था कितनी उपराम रहनी चाहिए । कोई भी छी-छी चीज में ममत्व नहीं रहना चाहिए । शरीर में भी ममत्व न रहे, इतना योगी बनना है । जब सच-सच ऐसे योगी होंगे तो वह जैसे फ्रेश (ताजा) रहेंगे । जितना तुम सतोप्रधान बनते जायेंगे, खुशी का पारा उतना चढ़ता जायेगा । 5 हजार वर्ष पहले भी ऐसी खुशी थी । सतयुग में भी वही खुशी होगी । यहाँ भी खुशी रहेगी फिर यही खुशी साथ में ले जायेंगे । अन्त मती सो गति कहा जाता है ना ।
- ✓ यह पुरुषोत्तम संगमयुग है, जबकि तुम पुरुषार्थ करते हो सतोप्रधान बनने के लिए ।

- ✓ तुम ब्राह्मण ही सिविल- आइज्ड बन रहे हो ।
- ✓ यह तो दुनिया ही क्रिमिनल- आइज्ड है । तुम अभी सिविल- आइज्ड बनते हो । मेहनत है, ऊँच पद पाना मासी का घर नहीं है । जो बहुत सिविल- आइज्ड बनेंगे वही ऊंच पद पायेंगे । तुम तो यहाँ आये हो नर से नारायण बनने के लिए ।
- ✓ तो बाप कहते हैं तुम्हारी ज्योति भी बिल्कुल बुझ नहीं जाती है, कुछ न कुछ लाइट रहती है । सुप्रीम बैटरी से फिर तुम पॉवर लेते हो । खुद ही आकर सिखलाते हैं कि मेरे साथ तुम कैसे योग रख सकते हो ।

✓ वरदान: स्वयं को निमित्त समझ व्यर्थ संकल्प या व्यर्थ वृत्ति से मुक्त रहने वाले विश्व कल्याणकारी भव!

✓ अच्छा । मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग । रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।